The Research Dialogue
An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-2, Issue-3, October-2023
www.theresearchdialogue.com

वर्तमान भारत के शैक्षिक मूल्य: सम- सामयिक विमर्श

डॉ. लालमणि प्रजापति
सहायक आचार्य
गांधी स्मारक महाविद्यालय समोधपुर, जौनपुर।

सारांश:-

शैक्षिक मूल्य ऐसी आचरण संहिता या सदगुण है, जिससे व्यक्ति अपने निश्चित लक्ष्यो की प्राप्ति हेतु अपनी जीवन -पद्धति का निर्माण करता है तथा अपने व्यक्तित्व का विकास करता है। इसमें मनुष्य की धारणाएं, विचार, विश्वास, मनोवृति, आस्था आदि समाहित है। ये मानव मूल्य एक ओर व्यक्ति के अंत:करण द्वारा नियंत्रित होते हैं तो दूसरी ओर उसकी संस्कृति एवं परंपरा द्वारा क्रमश: निस्सृत एवं पारिपोषित होते हैं। हमारा संविधान नैतिक मूल्यों की अमूल्य निधि है। भारतीय संविधान की प्रस्तावना में जो मूल्य बताए गए हैं उन्हें शिक्षा द्वारा ही छात्रों के जीवन में उतारा जा सकता है। वे मूल्य हैं- प्रजातंत्र, समाजवाद, धर्मनिरपेक्षता, न्याय, सहिष्णुता, व्यक्ति की गरिमा, विचार, अभिव्यक्ति आदि। ईमानदारी, उपकार, विनम्रता,अहंकार, नि: स्वार्थता, समभाव, मन, वचन, कर्म की एकता के गुण -इन्हीं मूल्यों को अपने छात्रों के जीवन में उतारना है।बालक को मूल्यपरक शिक्षा देनी चाहिए। वर्तमान समय के मूल्यों को बताने के लिए मात्र उपदेश ही पर्याप्त साधन माना जाता रहा है। इसमें अनुभूति, चिंतन तथा क्रियान्वयन का अभाव दिखाई देता है। मूल्यपरक शिक्षा में ये सभी बातें अपरिहार्य हैं। शिक्षा ऐसी दी जानी चाहिए जिससे व्यक्ति यह समझे कि वह स्वयं क्या है? उसके कर्तव्य क्या है? उसे जीवन में किसे प्राथमिकता देनी है? निष्ठाओं का टकराव क्यों होता है? तभी वह अच्छे मूल्यो का विकास कर सकता है।

मुख्य शब्द – शिक्षा, मूल्य, और सम-सामयिक, विमर्श।

प्रतावना-

तीव्र गति से होने वाले आधुनिक औद्योगिक विकास, जनसंख्या विस्फोट एवं नगरीकरण के कारण आज का मानव मानसिक पीड़ाओं, वैयक्तिक कुंठाओं तथा आर्थिक विषमताओं से त्रस्त है। इसका प्रमुख कारण मानव - मूल्यों के प्रति उसकी निष्ठा का क्रमिक ह्रास है। इस नैतिक ह्रास के लिए हमारी शिक्षा प्रणाली उत्तरदाई है। प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली मानव- मूल्यों को विकसित करने तथा आध्यात्मिक व्यक्तित्व के निर्माण में सक्षम थी। उसमें शारीरिक एवं मानसिक शिक्षा के अतिरिक्त आध्यात्मिक शिक्षा पर बल दिया जाता था। उस समय दो प्रकार की शैक्षिक संस्थाये थी। धार्मिक तथा व्यावसायिक। धार्मिक शिक्षा संस्थानों में मनुष्य के सर्वांगीण विकास -शरीर ,मन तथा आत्मा के विकास पर बल दिया जाता था। व्यावसायिक संस्थाएं जीवन के कर्तव्यों के लिए मानव को तैयार करती थी। बौद्ध कालीन शिक्षा पद्धति में आध्यात्मिक विकास पर बल दिया जाता था। उस समय शिक्षा धार्मिक तथा व्यावसायिक दोनों प्रकार की थी। मुस्लिम काल में भी शिक्षा धर्म प्रधान थी। उस समय प्रत्येक छात्र को नैतिकता का अध्ययन करना पड़ता था। परंतु ब्रिटिश काल में अंग्रेजों ने धर्म के संबंध में तटस्थता की नीति को अपनाया। इस कारण उस काल की शिक्षा संस्थानों में नैतिकता की शिक्षा को कोई स्थान नहीं मिला। स्वतंत्रता के बाद धर्मनिरपेक्षता पर बल दिया गया। इस कारण धार्मिक शिक्षा को कोई स्थान नहीं मिला। इसमें व्यावहारिक कठिनाइयां यह रही कि भारत में विभिन्न धर्म, विश्वास एवं समुदाय के लोग रहते हैं। अतः धर्म विशेष की शिक्षा देने से अनेक अनिष्टो की आशंका रहती है।

प्रत्येक समाज के कुछ नियम, उप नियम होते हैं, जो उसकी आधारशिला होते हैं और जिसका पालन करने पर मनुष्य एक सामाजिक प्राणी बनता है। यही नियम और आदर्श मूल्य कहलाते हैं, जो बताते हैं कि क्या अच्छा है? क्या बुरा है? सामाजिक व्यवस्था को सुचारू रूप से चलने के लिए उच्चस्तरीय मानदंडों का निर्माण करना पड़ता है- मूल्य ही ये मानदंड है, जो सामाजिक व्यवस्था को सुचारू रूप से चलने में सहायक होते हैं। प्रत्येक समाज के मूल्यों में भेद होना, इसी सच का उदाहरण है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में मूल्यो की संकल्पना की गई है और यह प्रयास किया गया है कि छात्र -छात्राओं में मूल्य विकसित हो सके। NEP2020 में प्रयास किया है कि शिक्षा की व्यवस्था का पुनः अभिविन्यास करके, तथा युवकों को यह महसूस कराया जाए कि किस तरह वे शोषण, से बच सके। शिक्षा ऐसी दी जानी चाहिए जिससे छात्रों में सत्य, सहयोग, कर्तव्य परायणता आदि का विकास हो। सबसे पहली शिक्षा बालक माता-पिता से लेता है। अतः माता-पिता का व्यवहार मूल्य से संबंधित होना चाहिए। वर्तमान पाठ्यक्रम में नैतिक मूल्य संबंधी अंशों को बढ़ाना चाहिए, पाठ्य - पुस्तकों में भी नैतिक मूल्य संबंधी अंश होने चाहिए।

मूल्य शिक्षा किसी विषय -विशेष से संबंधित न होकर विद्यालय की समस्त पाठ्यचर्या और क्रियाकलापों का अभिन्न अंग है। मूल्य शिक्षा का अभिप्राय सुसंगठित सभ्य समाज के उद्देश्यों को वास्तविकता के धरातल पर लाना है। इसके लिए भारत के संविधान ने हमें दिशा बोध दिया है। एन.सी.ई.टी. द्वारा 1985 में बनाए गए प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा के राष्ट्रीय पाठ्यक्रम की रूपरेखा में मूल्य शिक्षा को विद्यालयीय पाठ्यक्रम के मुख्य अंग माना गया है।

विद्यालय स्तर पर शिक्षा का सामान्य उद्देश्य समानता के विकास पर बल देना है। ये समानताएं मनुष्य को समाज में प्रभावशाली बनाए रखती है। प्रभावशाली व्यक्तित्व परस्परता एवं सामंजस्य जैसी उच्च क्षमताओं का धनी होता है। अतः आवश्यक है कि विद्यालय जीवन में बालक के चरित्र एवं व्यवहार में समानता के प्रति आकर्षण पैदा हो। मित्रता, सहयोग, करुणा, आत्मानुशासन ,आत्म -संयम, आत्म-विवेचन, विनोदशीलता ,प्रेम, साहस, सामाजिक न्याय के प्रति जागरूकता आदि गुणों को प्रकाश मे लाकर बालकों में समानता के प्रति चेतना एवं समता के प्रति प्रेरणा जागायी जा सकती है। अध्यापक को चाहिए कि वह बच्चों में ईमानदारी, सत्यता, निर्भरता, सृजनता, निर्भरता और करुणा जैसी नैतिक और चारित्रिक मूल्यों का विकास करें ।यहां प्रासंगिक होगा कि हम संक्षिप्त शब्दों में नैतिक और चारित्रिक मूल्यों का अर्थ समझ लें। धार्मिक और नैतिक शिक्षा समिति 1959 के द्वारा नैतिक मूल्यों की जो परिभाषा दी गई है, उसके अनुसार- "जो भी शिक्षा हमें दूसरों के प्रति सही आचरण करने की में सहायक हो वही नैतिक शिक्षा है। समिति द्वारा आध्यात्मिक मूल्यों की विवेचना इस प्रकार की गई है- जो मूल्य हमें स्वार्थ से उठकर परमार्थ के लिए या दूसरे महान कार्यों के प्रति समर्पित होने के लिए प्रेरित करें, वही आध्यात्मिक मूल्य हैं।

हर देश अपनी विशिष्ट सामाजिक सामाजिक-सांस्कृतिक पहचान को व्यक्त करने और बढ़ावा देने के लिए समय की चुनौतियों का सामना करने के लिए शिक्षा की अपनी प्रणाली विकसित करता है। यद्यपि देश विभिन्न क्षेत्रों जैसे- वैज्ञानिक प्रौद्योगिकी , आर्थिक बुनियादी ढांचे आदि में तेजी से प्रगति की है, लेकिन इसकी मूल्य प्रणाली को अस्वीकार कर दिया गया है। इसलिए सामान्य रूप से शिक्षा और मूल्य विशेष रूप से समकालीन समाज के आधुनिक सन्दर्भ में एक प्रतिष्ठित स्थान पर है। युवाओं की मूल्य शिक्षा की समस्या ने हाल के दिनों में शैक्षिक चर्चा में बढ़ती प्रमुखता ग्रहण की है। माता-पिता, शिक्षक और समाज बड़े पैमाने पर बच्चों के मूल्य और मूल्य शिक्षा के बारे में चिंतित हैं। आज हम पूरे विश्व में जबरदस्त मूल्य संकट देख रहे हैं। मूल्य और इसके संस्थाओं के प्रति एक अभावग्रस्त रवैया आज दुनिया में व्याप्त है। स्वार्थ झड़प और रक्तपात के बराबर गुना का पुनः प्रकट होना मानव समाज के पतन की प्रक्रिया का स्पष्ट संकेत देता है। मानव जीवन के मूल्यों को पुनर्जीवित करने और सुधारने व सभ्यता की नीव को फिर से जीवित करने के लिए एक महान प्रयास की तत्काल आवश्यकता है। मूल्य उपलब्धियां के लिए निर्धारित किए गए लक्ष्य हैं और ये हमारे सभी गतिविधियों को संज्ञानात्मक और सकारात्मक रूप से परिभाषित और रंगीन करते हैं। उन्हें सामाजिक रूप से परिभाषित इच्छाओं

और लक्ष्यों के रूप में वर्णित किया जाता है। जिन्हें कंडीशनिंग सीखने और समाजीकरण की प्रक्रिया के माध्यम से आंतरिक किया जाता है। वर्तमान शिक्षा को नैतिक, आध्यात्मिक और सौंदर्य मूल्यों को भी इसमें शामिल करने की आवश्यकता है। केवल मूल्य शिक्षा की सहायता से संस्कृति और परंपराओं को अगली पीढ़ी में संरक्षित और स्थानांतरित किया जा सकता है। मूल्य शिक्षा का संबंध व्यक्तिगत पूर्णता के लिए प्रयास करने के साथ-साथ दूसरों के प्रतीक जिम्मेदार रवैया और गलत -सही व्यवहार की समझ पैदा करने से है। मूल्य शिक्षा में सबसे रचनात्मक कारक इसका उद्देश्य है जो बच्चों को जीवित मार्गदर्शन की पेशकश करते हुए, शक्तियों का पता लगाने और व्यवहार के लिए उचित सीमा निर्धारित करने के लिए प्रोत्साहित करता है। मूल्य शिक्षा लोगों और आदर्शों के लिए सकारात्मक भावनाओं के निर्माण और मजबूत करने में मदद करती है। इस सामाजिक जीवन में सक्रिय भागीदारी और सामाजिक नियमों की स्वीकृति के लिए व्यक्तियों को तैयार करना चाहिए। मूल्य शिक्षा को शिक्षा के विभिन्न पहलुओं में शामिल किया जाना है। समाज में मूल्य शिक्षा के महत्व को फैलाने के लिए उच्च अधिकारियों द्वारा ध्यान देने की भी आवश्यकता है।

स्वतंत्रता के बाद भी शिक्षण संस्थानों में नैतिक एवं धार्मिक शिक्षा का कोई वांछित स्थान प्राप्त नहीं हो सका परंतु इसकी आवश्यकता की अनुभूति अवश्य की गई। स्वतंत्रता काल में विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग (१९४८-४९), माध्यमिक शिक्षा आयोग (१९५२-५३) ,धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा समिति (१९५९),शिक्षा- आयोग (१९६४-६६), भावात्मक एकता समिति (१९६१)आदि सभी ने नैतिक शिक्षा को समुचित महत्व दिया । शिक्षा- आयोग ने विविध मानव- मूल्यों के शिक्षण को प्रारंभ करने का सुझाव दिया। आयोग के अनुसार, "आज के विद्यालय -पाठ्यक्रम में एक गंभीर दोष यह है कि उसमें हमारे नैतिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों के शिक्षण का कोई प्रावधान नहीं है। अधिकांश भारतीयों के जीवन में धर्म एक महान प्रेरक शक्ति के रूप में विद्यमान है जो चरित्र निर्माण एवं नैतिक मूल्यों के आभ्यंतरीकरण से घनिष्ठ रूप से संबंध है ।कोई भी राष्ट्रीय शिक्षा- प्रणाली जो लोगों के जीवन उनकी आवश्यकताओं और आकांक्षाओं से संबंध है , इस महत्वपूर्ण शक्ति की उपेक्षा नहीं कर सकती। इसलिए इस बात की सिफारिश करते हैं कि जहां भी संभव हो, विश्व के महान धर्मो की नैतिक शिक्षाओं के माध्यम से सामाजिक ,नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों के शिक्षण के लिए जागरुक एवं संगठित प्रयास किए जाने चाहिए।

भारतीय शिक्षा व्यवस्था में सुधार करने के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारत सरकार द्वारा प्रस्तुत किया गया है। जिसका क्रियान्वयन का प्रयास किया जा रहा है।NEP2020 के नवीन संस्करण में ऐसी शिक्षा व्यवस्था विद्यमान है, जो भारतीय ज्ञान एवं मूल्यों पर आधारित है। जिसके जरिए एक ऐसा समाज बन सकता है, जहां ज्ञान की अविरल धारा से उपलब्धियो का कोष समृद्ध होता रहेगा। यह नीति युवाओं में पढ़ाई के प्रति बुनियादी बदलाव और नया नजरिया विकसित करेगी। इसके अलावा स्कूल स्तर पर व्यावसायिक शिक्षा पाठ्यक्रम के शामिल होने, साथ-साथ सभी विषयों

में डिग्री स्तर पर अनुसंधान को अनिवार्य करने के संबंध में सामान्य सामाजिक दृष्टिकोण दिखाई दे रही है। यह शिक्षा नीति प्रगतिशील, समृद्ध, सृजनशील एवं नैतिक मूल्यों से पूर्ण एक ऐसे भारत की संकल्पना कर रही है जो अपने गौरवशाली इतिहास को पुनर्जीवित करने का स्वप्न दिखाती है। जिसमें अपार संभावनाएं परिलक्षित हैं- शिक्षा के क्षेत्र को तकनीकि से जोड़ना, सभी स्कूलों का डिजिटलीकरण करना, क्षेत्रीय भाषाओं को बढ़ावा देना, व्यावसायिक प्रशिक्षण इंटर्नशिप, जेंडर एजुकेशन, डिग्री स्तर पर अर्जित अंकों का हस्तांतरण, परास्नातक पर रिसर्च प्रोजेक्ट अनिवार्य, विदेशी विश्वविद्यालय का भारत में कार्य करना, राष्ट्रीय अनुसंधान फाउंडेशन का गठन, वर्ष 2030 तक अध्यापन के लिए न्यूनतम 4 वर्षीय एकीकृत डिग्री यानी 2020 के तहत उच्च शिक्षा संस्थानों में सकल नामांकन अनुपात(GER) को बढ़ाना, उच्च शिक्षा संस्थानों में अकादमिक बैंक आफ क्रेडिट आदि की वृहद संभावनाएं दिखाई दे रही हैं। जिससे भारत का एक नया स्वरूप एवं मूल्य विकसित होगा

वर्तमान समय में भारत में विद्यमान शिक्षा व्यवस्था का स्वरूप अच्छा तो है, किन्तु क्रियान्वयन ठीक से न होने से परिणाम सकारात्मक नहीं दिखाई दे रही है। जिससे विद्यार्थियों में मूल्य विकसित नहीं हो पा रहा है। मूल्य शिक्षा के साधनों में प्रश्न उठता है कि परिवार, समाज एवं विद्यालय क्या अपनी सही भूमिका निभा रहे हैं ? खासतौर पर शिक्षा। क्या अपेक्षित लक्ष्य प्राप्ति में सफल हैं ? यह एक सोचनीय व चिन्तनीय विषय आज संपूर्ण विश्व के समक्ष एक ज्वलन्त समस्या है " शिक्षा में मूल्य का ह्रास। इसका प्रधान कारण यह है कि तथ्यों की जानकारी से मनुष्य का मस्तिष्क भर जाता है किंतु उसकी अंतरात्मा खाली की खाली बनी रहती है। यह दुर्भाग्यपूर्ण आश्चर्य की बात है कि शिक्षा में प्रशिक्षण द्वारा पशु से मानव बनाने का उपक्रम तो किया जा रहा है किंतु मानव को मानव बनाने का नहीं। या यू' , कहे कि मनुष्य की अंतर्निहित पाश्विकता और बढ़ रही है।वैश्विक युग में मासूमियत पर कहर ढाता आज का तकनीकी संसार भावनात्मक विकास को कुंद कर रहा है। नाटकीय बनावटी जिंदगी शिक्षित कहे जाने वाले समुदाय में अब संस्कृति को बढ़ावा दे रही है। शिक्षा का सूत्र उसका स्रोत अंतस में है। यह एक संस्कार है जो बीज रूप में अंकुरित होकर वृक्ष बनता है किंतु आज लक्ष्योविमुख शिक्षा महज विद्वान तैयार कर रही है। प्रेम, दया, सहानुभूति, क्षमा, शौर्य, समर्पण सहयोग, आदि व्यक्तित्व नहीं।

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था, शिक्षा के सिद्धांतो की अपेक्षा मूल्य के व्यावहारिक प्रयोग पर बल देना चाहिए। विद्यालयों में मूल्य प्रधान पर्यावरण को महत्व देना चाहिए। मूल्य शिक्षा को सभी विषयों के साथ-साथ समन्वित करके प्रदान करना चाहिये। ऐसे सांस्कृतिक व साहित्यिक कार्यक्रमों को बढ़ावा देना चाहिए, जिससे आदर्शात्मक मूल्यों को अपनाने की प्रेरणा मिले तथा विकास के लिए घर, विद्यालय व समाज, का समन्वित प्रयास बाल्यकाल से ही होना चाहिए। स्वयं बड़ों को प्रेम आधारित आचरण करना चाहिए जिससे बच्चे उनसे सीख सकें। मूल्य विकास में शिक्षा महत्वपूर्ण भूमिका रखता है इसके लिए उन्हें स्वयं मूल्य आधारित आचार- विचार करने के लिए प्रयास करना चाहिए। राष्ट्रीय शौर्य,

महापुरुषों के जन्मदिवस को और आदर्श मूल्यो का ज्ञान कराकर विद्यार्थी को उसे अपने के लिए प्रेषित करना चाहिए। इसके अतिरिक्त जनसंचार में बढ़ रहे अनैतिक गतिविधियों कार्यक्रमों और मूल्यों पर विशेष रोक लगनी चाहिए। महात्मा बुद्ध ने कहा था- कोई भी मूल्य तभी सार्थक हो सकता है जब व्यक्ति अपनी बुद्धि और विवेक से उसे उपयोगी व सत्य समझे। इसके लिए व्यक्ति को स्वयं मूल्य प्रधान आचरण को अपनाना होगा मूल्यहीनता, पथभ्रष्टता का क्या दुष्परिणाम है? इसके लिए विभिन्न माध्यमों द्वारा जन चेतना लानी चाहिए। शक्ति संपन्नता के स्थान पर संस्कार संपन्नता को बढ़ावा देना चाहिए। इसके लिए समन्वय एवं समतामूलक शिक्षा होनी चाहिए ।आज के समय में मूल्यपरक एक शिक्षा की आवश्यकता युवा वर्ग के विशेष संदर्भ में है जिनमें भटकाव की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है आज हमें धर्म प्रधान राजनीति की आवश्यकता है जो वर्ग विहीन ,शोषण, रहित, प्रेमपूरित मूल्यो का विकास कर सके। इसके लिए हमें सदा जीवन उच्च विचार के सिद्धांतों को अपनाना चाहिए।

निष्कर्ष –

शिक्षा बहुआयामी, नित- नूतन और शाश्वत विकास की प्रक्रिया है। इसका स्वतंत्र, निर्भीक, स्वयंसेवी तथा रोचक होना आवश्यक है। प्रमाण पत्र श्रेणी या वर्ग पर बल न दिया जाए तथा अनुभव, रुचि और तत्परता पर आधारित सभी माध्यम और विधियो को प्रभावशाली तथा कार्य कुशल शिक्षा के लिए प्रयोग में लाया जाए। सभी स्तरों पर शिक्षा के अवसरों की समानता सुनिश्चित की जाए तथा समाज के लिए दलित और आर्थिक रूप से अक्षम बच्चों को सुसंगत शिक्षा देने के लिए विशेष सुविधाएं उपलब्ध कराई जाए।सम्पूर्ण शिक्षा प्रणाली में अमूल परिवर्तन किया गया है किंतु जीवन की आवश्यकताओं और मूल्यों के अनुकूल वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में कमी महसूस हो रही है।

समाज में ही व्यक्ति का विकास होता है और वहीं प्रतिभाये विकसित होती है। शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है। सन 1947 में भारत को स्वतंत्रता प्राप्त हुई और सन 1950 में स्वतंत्र भारत का नवीन संविधान लागू हुआ जिसकी प्रस्तावना में ही लिखा है- " हम भारत के लोग भारत को संपूर्ण प्रभुत्व संपन्न गणराज्य बनाने के लिए तथा उसके समस्त नागरिकों को सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, न्याय, विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म और उपासना की स्वतंत्रता, प्रतिष्ठा और अवसर की समता प्राप्त कराने के लिए उन सब में व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता सुनिश्चित करने वाली बंधुता बढ़ाने के लिए मैं इस संविधान को अंगीकृत ,अधिनियमित और आत्माअर्जित करते हैं।"वर्तमान परिपेक्ष्य में अधिकतर शिक्षण संस्थानों में शिक्षकों द्वारा मूल्य का समावेशन कल्पना की बात समझा जाता है या थोथे आदर्शों की संज्ञा दी जाती है, मूल्यो के ह्रास की आड़ में मूल्य की शिक्षा प्रभावोत्पादकता को संदेह की नजरों से देखते हैं और अन्य विषय वस्तु की रटने पर बल दिया जाता हैं तथा उसमें छिपे मूल्यो की परवाह नहीं करते हैं जिसके कारण वर्तमान समय में छात्रों का भविष्य धुंधला एवं अंधकारमय दिखाई देता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची -

१- अग्रवाल, जे.सी. उदयमान भारतीय समाज में शिक्षा अग्रवाल पब्लिकेशंस हेड ऑफिस 28 ऑब्लिक 115 ज्योति ब्लॉक संजय प्लेस आगरा टू ISBN 978-93-80510-7811

२- शुक्ला. डॉ सी.एस.- शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार। अनुभव पब्लिशिंग हाउस 618/95/ 38 सर्वोदय नगर अल्लापुर इलाहाबाद 211006 उत्तर प्रदेश। ISBN 978-81-907587-4-1

3- लाल, बिहारी रमन - शिक्षा के दार्शनिक व समाजशास्त्रीय सिद्धांत पृष्ठ संख्या 387

4- श्रीवास्तव, चंद्र कृष्ण -प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति पृष्ठ संख्या 147

5-पांडेय, रामसकल - उदयमान भारतीय समाज में शिक्षा अग्रवाल पब्लिकेशंस, हेड ऑफिस28/ 115 ज्योति ब्लॉक संजय प्लेस आगरा- टू ISBN 978-81-905301-0-1

THE RESEARCH DIALOGUE

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed /Refereed National Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-2, Issue-3, October-2023
www.theresearchdialogue.com
Certificate Number October-2023/26
Impact Factor (IIJIF-1.561)
https://doi-ds.org/doilink/01.2023-11922556

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

डॉ लालमणि प्रजापति

for publication of research paper title

"वर्तमान भारत के शैक्षिक मूल्य: सम- सामयिक विमर्श"

Published in 'The Research Dialogue' Peer-Reviewed / Refereed Research Journal and E-ISSN: 2583-438X, Volume-02, Issue-03, Month October, Year-2023.

Dr. Neeraj Yadav
Executive Chief Editor

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Editor-in-chief

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.theresearchdialogue.com

INDEXED BY